SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 5

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

भाग - 3

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

धार्मिक विवाद और प्रिंट का डर

- छापेखाने से विचारों के व्यापक प्रचार-प्रसार के साथ-साथ बहस-मुबाहिसे के द्वार खुले।
- स्थापित सत्ता के विचारों से असहमत होने वाले लोग भी अब अपने विचारों को छापकर उन्हें फैला सकते थे।
- छपे हुए संदेश के ज़रिए वे लोगों को अलग ढंग से सोचने के लिए मना सकते थे।
- साथ ही उनको कोई कार्रवाई करने के लिए प्रेरित कर सकते थे।

- ज़ाहिर है कि इस बात का जीवन के कई क्षेत्रों में गंभीर महत्त्व था।
- हर कोई मुद्रित किताब को लेकर खुश नहीं था।
- जिन्होंने इसका स्वागत भी किया, उनके मन में इसको लेकर कई डर थे।
- कई लोगों को छपी किताब के व्यापक प्रसार और छपे शब्द की सुगमता को लेकर यह आशंका थी कि न जाने इसका आमलोगों के ज़ेहन पर क्या असर हो।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जे.वी. श्ले, लाम्प्रीमेरी (छापाख़ाना) 1739



missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह आधुनिक यूरोप के प्रारंभ में प्रिंट के आगमन का उत्सव मनाते हुए छपे कई चित्रों में से एक है।
- इस चित्र में छापाख़ाना लेकर एक देवी स्वर्ग से उतर रही है।
- इस देवी के आजू-बाजू मिनर्वा (विद्या की देवी) और मर्करी (दूत-देव, विवेक का प्रतीक) हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- तसवीर के आगे के हिस्से में अलग-अलग देशों के छः अग्रणी मुद्रकों की छवियों में औरतें हैं।
- बीच में बाईं ओर घेरे के अंदर गुटेन्बर्ग की तसवीर है।

- यह भी भय था कि अगर छपे हुए और पढ़े जा रहे पर कोई नियंत्रण न होगा तो लोगों में बाग़ी और अधार्मिक विचार पनपने लगेंगे।
- अगर ऐसा हुआ तो 'मूल्यवान' साहित्य की सत्ता ही नष्ट हो जाएगी।
- यह चिंता धर्मगुरुओं और सम्राटों तथा कई लेखकों एवं कलाकारों द्वारा व्यक्त की गई।
- यह चिंता इन नव-मुद्रित और नव-प्रसारित साहित्य की व्यापक आलोचना का आधार बनी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

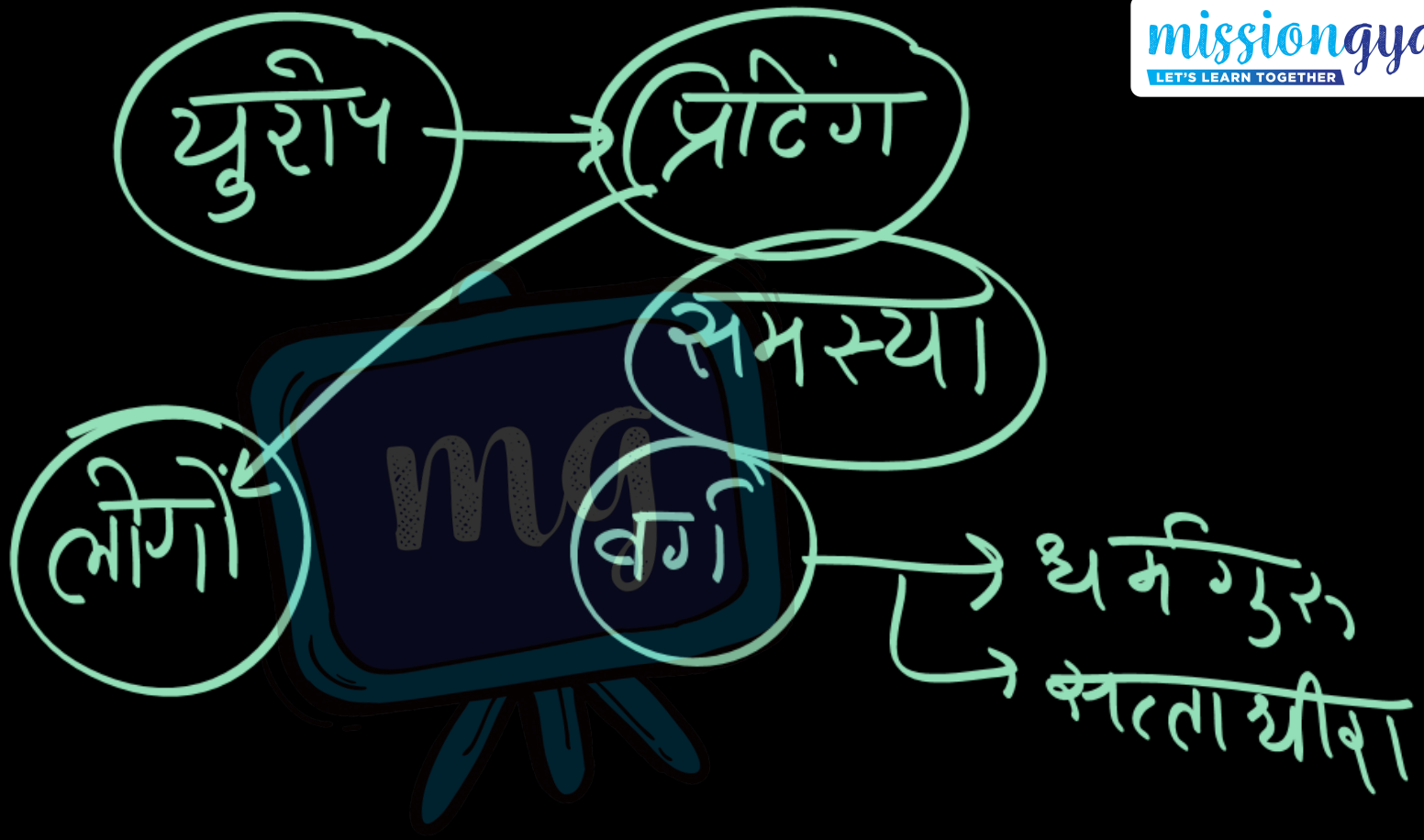

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



जीवन के एक क्षेत्र-धर्म में इसका असर

- धर्म-सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी 95 स्थापनाएँ लिखीं।
- इसकी एक छपी प्रति विटेनबर्ग के गिरजाघर के दरवाज़े पर टाँगी गई।
- इसमें लूथर ने चर्च को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी थी।
- जल्द ही लूथर के लेख बड़ी तादाद में छापे और पढ़े जाने लगे।



- इसके नतीजे में चर्च में विभाजन हो गया और प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार की शुरुआत हुई।
- कुछ ही हफ़्तों में न्यू टेस्टामेंट के लूथर द्वारा किये गये अनुवाद की 5000 प्रतियाँ बिक गईं, और 3 महीने के अंदर दूसरा संस्करण निकालना पड़ा।
- प्रिंट के प्रति तहेदिल से कृतज्ञ लूथर ने कहा, "मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफ़ा।"

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कई इतिहासकारों का यह खयाल है कि छपाई ने नया बौद्धिक माहौल बनाया।
- छपाई से ही नये विचारों के प्रसार में मदद मिली।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

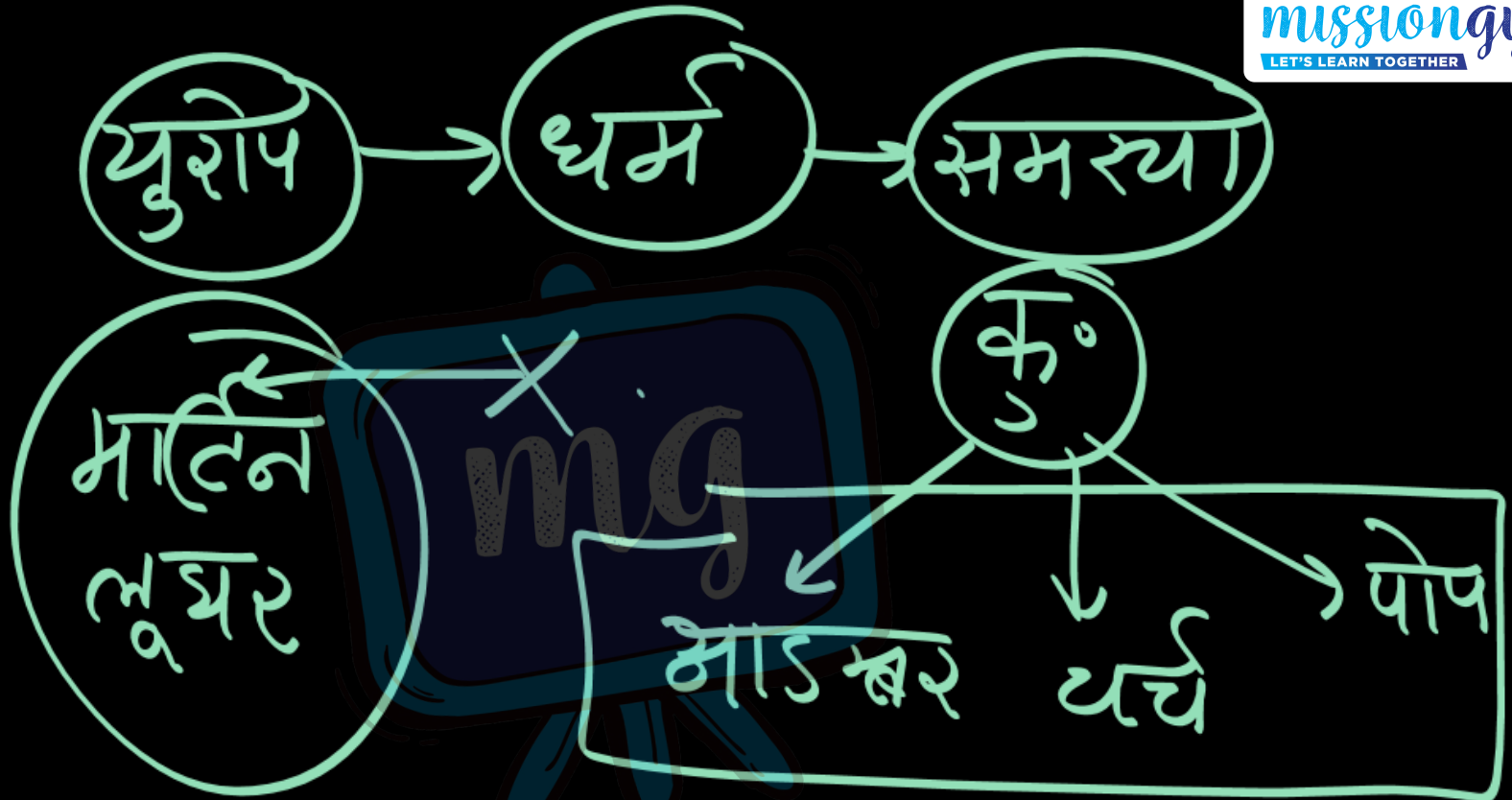

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार

- 16वीं सदी यूरोप में रोमन कैथलिक चर्च में सुधार का आंदोलन।
- मार्टिन लूथर प्रोटेस्टेंट सुधारकों में से एक थे।
- इस आंदोलन से कैथलिक ईसाई मत के विरोध में कई धाराएँ निकलीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मुद्रण संस्कृति का धर्म पर क्या प्रभाव पडा?

Q. प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार?

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मुद्रण और प्रतिरोध

- छपे हुए लोकप्रिय साहित्य के बल पर कम शिक्षित लोग धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित हुए।
- 16वीं सदी की इटली के एक किसान मेनोकियो ने अपने इलाके में उपलब्ध किताबों को पढना शुरू कर दिया था।
- उन किताबों के आधार पर उसने बाइबिल के नए अर्थ लगाने शुरू कर दिए।

- उसने ईश्वर और सृष्टि के बारे में ऐसे विचार बनाए कि रोमन कैथलिक चर्च उससे क्रुद्ध हो गया।
- ऐसे धर्म-विरोधी विचारों को दबाने के लिए रोमन चर्च ने इन्क्वीज़ीशन शुरू किया।
- इन्क्वीजीशन :- धर्म द्रोहियों की शिनाख्त कर दुरूस्त करने वाली संस्था।
- मेनोकियो को दो बार पकड़ा गया और आख़िरकार उसे मौत की सज़ा दे दी गई।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- धर्म पर उठाए जा रहे सवालों से परेशान रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं पर कई तरह की पाबंदियां लगाईं।
- 1558 ई. से प्रतिबंधित किताबों की सूची रखने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

धर्म-विरोधी : वह इनसान या विचार जो चर्च की मान्यताओं से असहमत हो।

मध्यकाल में चर्च विधर्मियों के प्रति सख़्त था।

उसको लगता था कि लोगों की आस्था, उनके विश्वास पर सिर्फ़ उसका अधिकार है, तथा चर्च की बात ही अंतिम हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

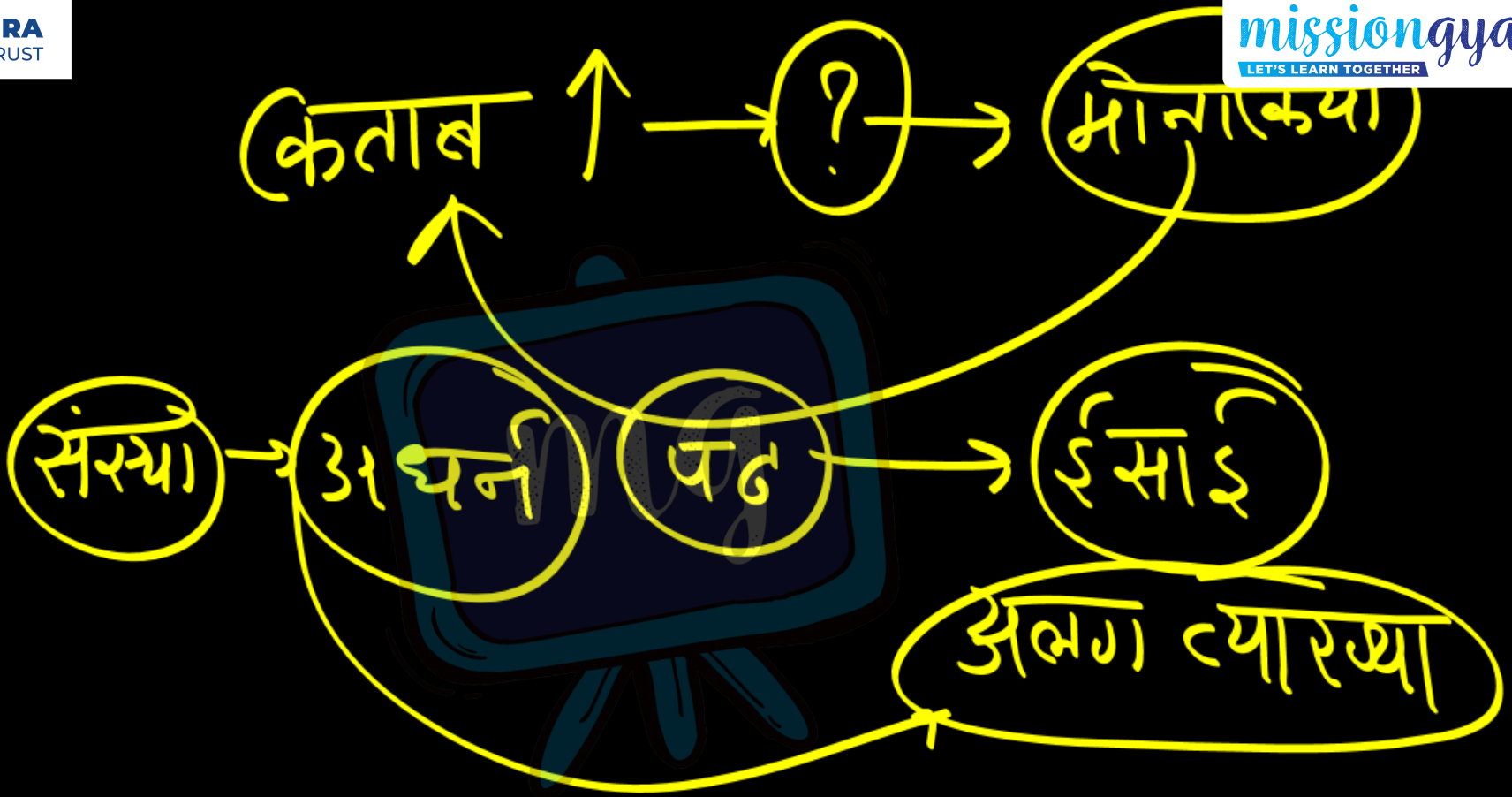

किताब का डर

- लातिन के विद्वान और कैथलिक धर्मसुधारक इरैस्मस भी प्रिंट को लेकर बहुत आशंकित रहते थे।
- उन्होंने कैथोलिक धर्म की ज्यादतियों की आलोचना की।
- उन्होंने लूथर से दूरी बनाकर रखी थी।
- उन्होंने एडेजेज़ (1508) में लिखा–

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 'किताबें भिनभिनाती मक्खियों की तरह हैं, दुनिया का कौन-सा कोना है, जहाँ ये नहीं पहुँच जातीं?
- हो सकता है कि जहाँ-तहाँ, एकाध जगह जानने लायक चीजें भी बताएँ, लेकिन इनका ज़्यादा हिस्सा तो विद्वान के लिए हानिकारक ही है।
- बेकार ढेर हैं, क्योंकि अच्छी चीज़ों की अति भी हानिकारक ही है।
- इनसे बचना चाहिए।

- मुद्रक दुनिया को सिर्फ़ तुच्छ चीज़ों से ही नहीं पाट रहे, बल्कि बकवास, बेवकूफ़, सनसनीख़ेज़, धर्मविरोधी, अज्ञानी, और षड्यंत्रकारी किताबें छापते हैं।
- और उनकी तादाद ऐसी है कि मूल्यवान साहित्य का मूल्य ही नहीं रह जाता।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

द मैकॅबर डान्स (वीभत्स ना

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

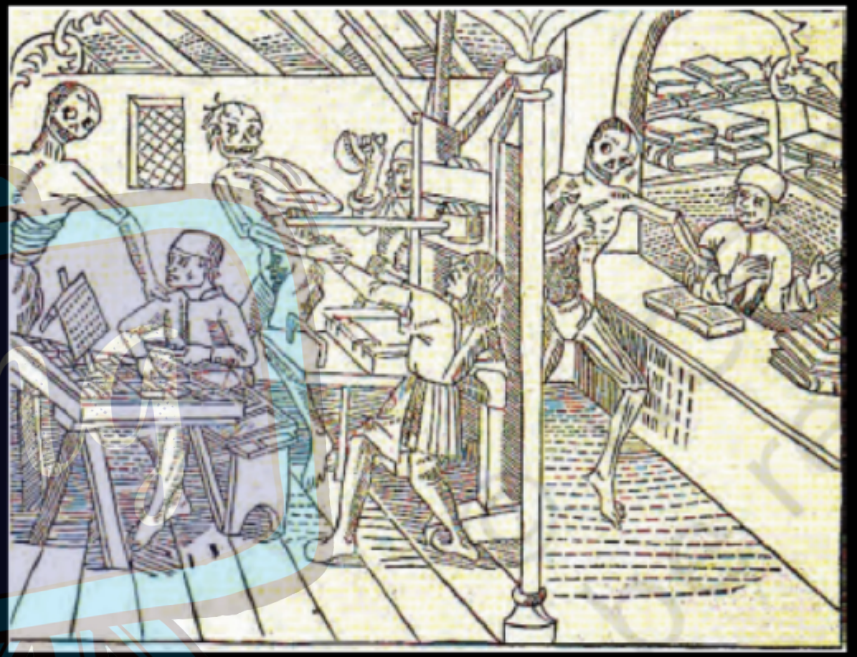

इस 16वीं सदी की तसवीर में, छपाई का ख़ौफ़ किस नाटकीयता से पेश किया जा रहा था, यह देखा जा सकता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस बेहद दिलचस्प वुडकट (तख़्ती-छाप) तसवीर में मुद्रण के आगमन को दुनिया के अंत से जोड़ा गया है।
- मुद्रक के वर्कशॉप को मौत के नाच का मंच बताया गया है।
- मुद्रक और उसके मज़दूर कंकालों के नियंत्रण में हैं, तथा उनसे मनचाही चीज़ें छपवाते हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

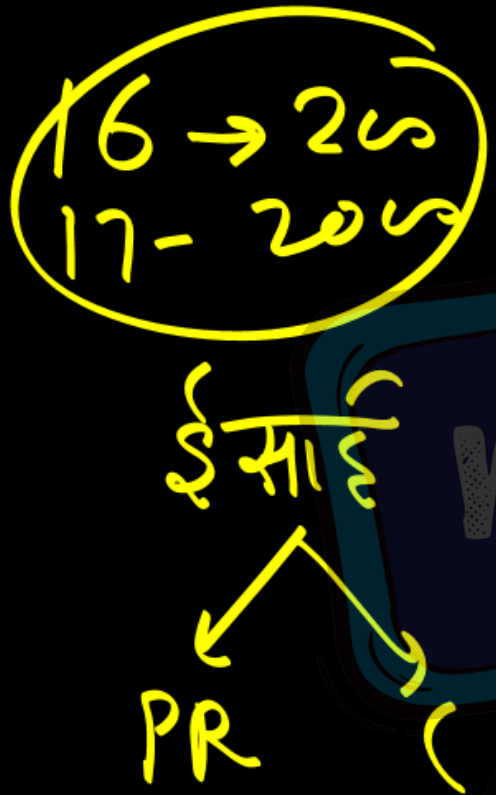

पढ़ने का जुनून

- पूरे 17वीं और 18वीं सदी के दौरान यूरोप के ज्यादातर हिस्सों में साक्षरता बढ़ती रही।
- अलग-अलग संप्रदाय के चर्चों ने गाँवों में स्कूल स्थापित किये और किसानों-कारीगरों को शिक्षित करने लगे।

संप्रदाय :- किसी धर्म का एक उप-समूह।

- 18वीं सदी के अंत तक यूरोप के कुछ हिस्सों में तो साक्षरता दर 60 से 80 प्रतिशत तक हो गई थी।

- यूरोपीय देशों में साक्षरता और स्कूलों के प्रसार के साथ लोगों में पढ़ने का जैसे जुनून पैदा हो गया।
- लोगों को किताबें चाहिए थीं इसलिए मुद्रक ज्यादा से ज्यादा किताबें छापने लगे।

किताबों के प्रकार :-

- नये पाठकों का ध्यान रखते हुए किस्म-किस्म का साहित्य छपने लगा।
- पुस्तक-विक्रेताओं ने गाँव-गाँव जाकर छोटी-छोटी किताबें बेचने वाले फेरीवालों को काम पर लगाया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

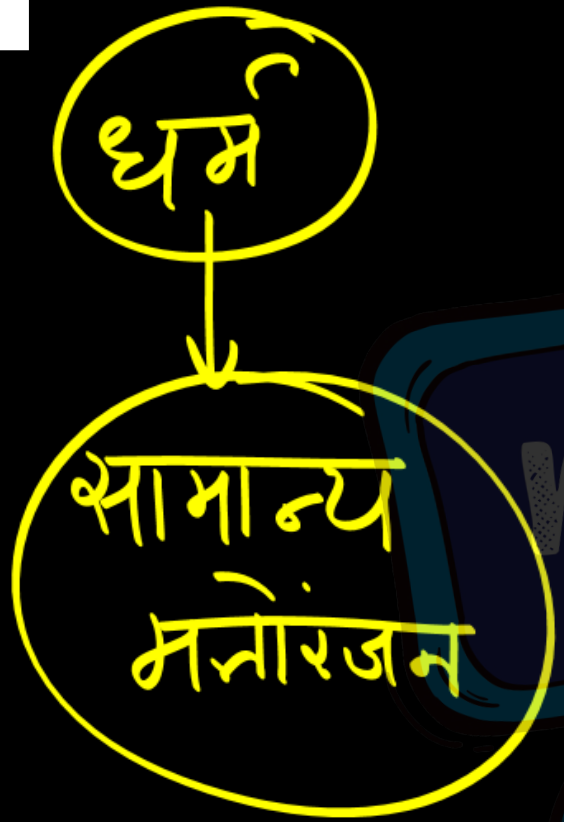

- ये किताबें मुख्यतः पंचांग के अलावा लोक कथाओं और लोक गीतों की हुआ करती थीं।
- लेकिन जल्दी ही मनोरंजन प्रधान सामग्री भी आम पाठकों तक पहुँचने लगी।
- इंग्लैंड में चैपबुक्स या एक पैसिया किताबें बेचने वालों को चैपमेन कहा जाता था।
- इन किताबों को गरीब तबके के लोग भी खरीद कर पढ़ सकते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

चैपबुक (गुटका) :- ये पॉकेट बुक के आकार की किताबों को कहा जाता था।
इन्हें आमतौर पर फेरीवाले बेचते थे।
ये 16वीं सदी की मुद्रण क्रांति के समय से लोकप्रिय हुए।

- फ्रांस में बिब्लियोथीक - ब्ल्यू का चलन था जो सस्ते कागज पर नीली जिल्द में छोटी किताब होती थी।
- इसके अलावा 4-5 पन्ने की प्रेम कहानिया थीं।
- अतीत की थोड़ी गाथाऐं थीं, जिन्हें 'इतिहास' कहते थे।
- अलग-अलग उद्देश्य ओर दिलचस्पी के हिसाब से किताबों के कई आकार प्रकार थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

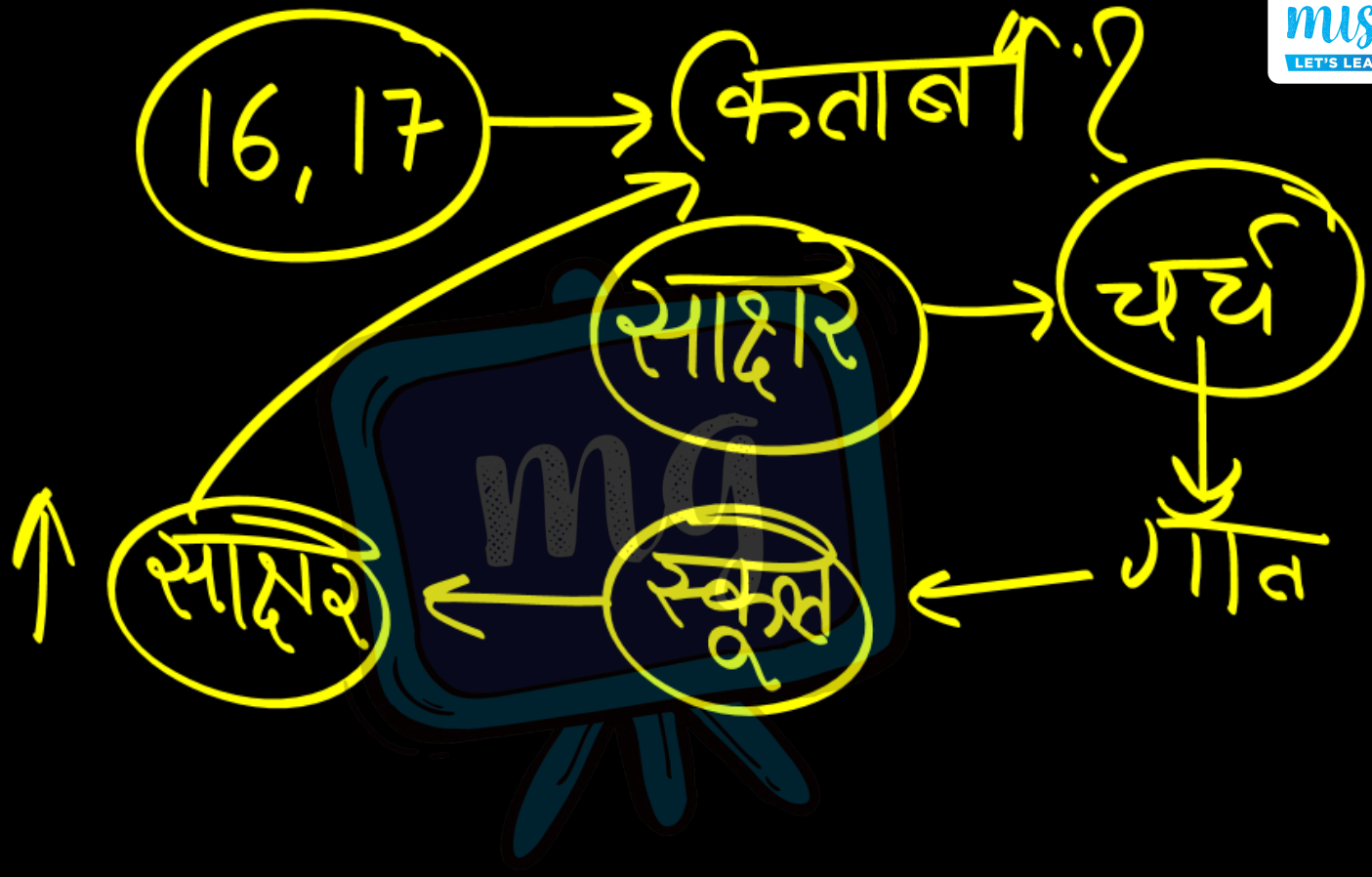

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

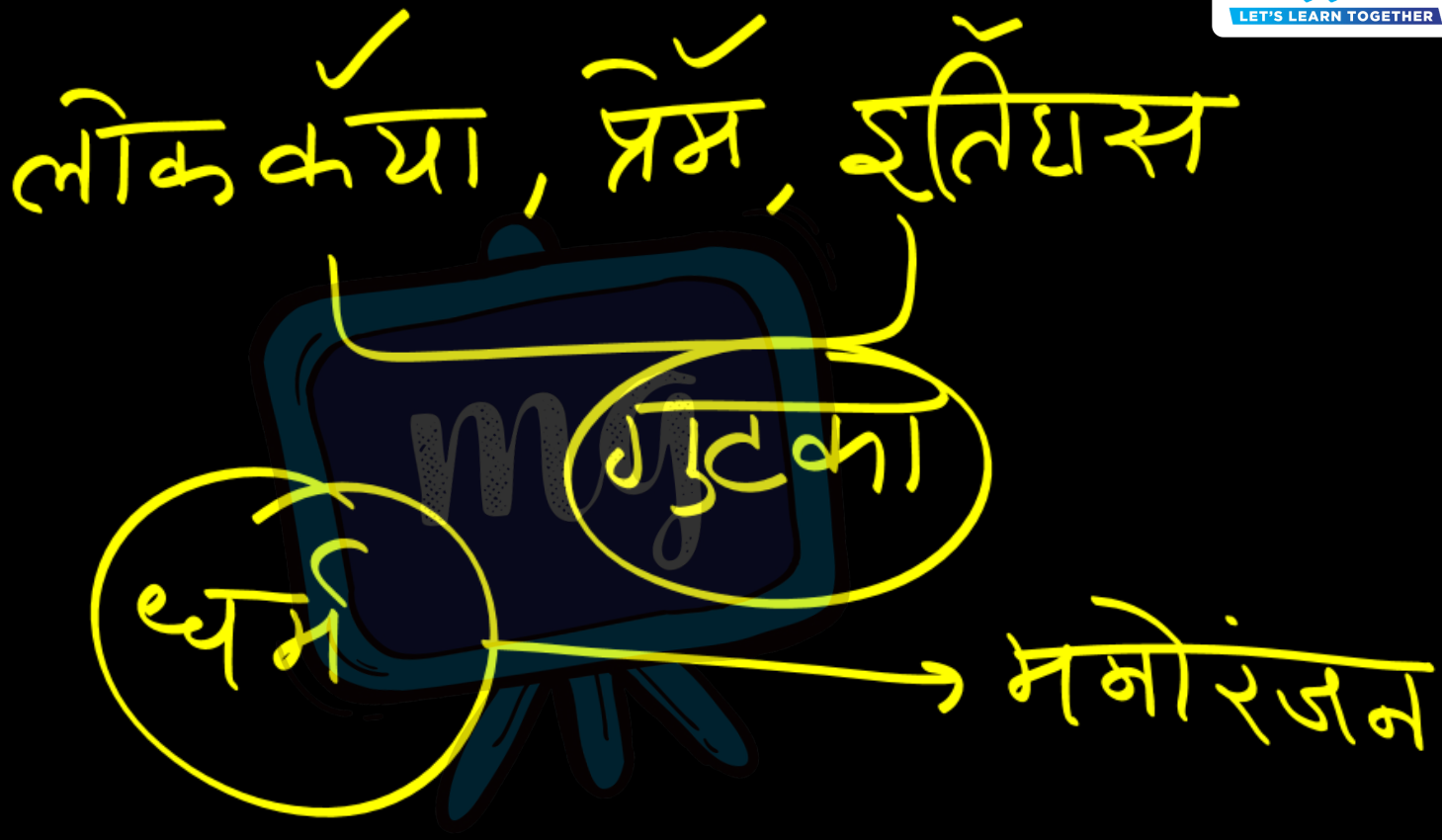

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. चैंपमैन किसे कहा जाता था?
चैंपतुक किसे कहते थे?

